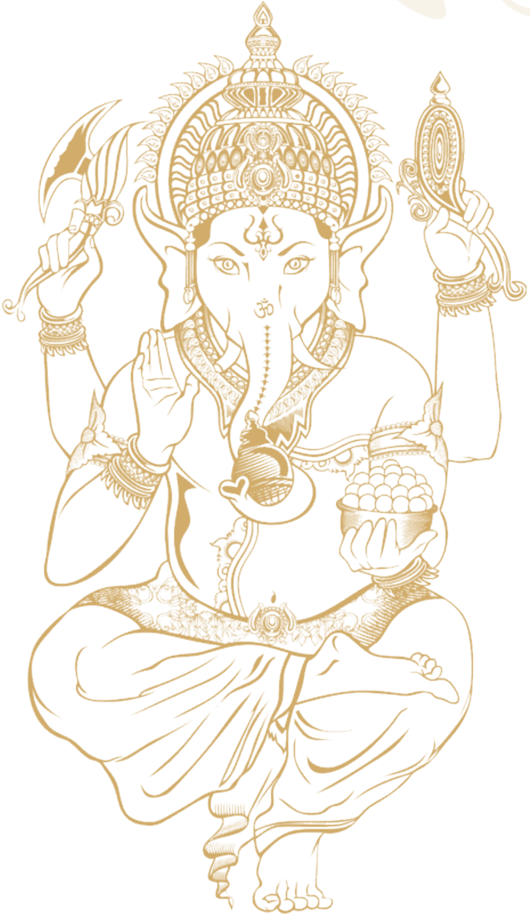

Mr.

27 Sep 2025

10:46 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119778401

तिथि 27/09/2025 **समय** 10:46:00 **वार** शनिवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:03
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	10:49:53 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:09:00 घं	योनि	मृग
सूर्योदय	06:12:09 घं	नाड़ी	मध्य
सूर्यास्त	18:11:35 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	कीटक
शक संवत	1947	वर्ग	सर्प
मास	आश्विन	युँजा	मध्य
पक्ष	शुक्ल	हंसक	जल
तिथि	5	जन्म नामाक्षर	नी-नीरज
नक्षत्र	अनुराधा	पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
योग	प्रीति	होरा	शुक्र
करण	बालव	चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी		योगिनी	
शनि 10वर्ष 1मा 15दि		भ्रामरी 2वर्ष 1मा 17दि	
शनि		भ्रामरी	
27/09/2025		27/09/2025	
12/11/2035		15/11/2027	
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	27/09/2025		27/09/2025
शुक्र	03/11/2026	सिद्धा	25/04/2026
सूर्य	16/10/2027	संकटा	16/03/2027
चन्द्र	16/05/2029	मंगला	26/04/2027
मंगल	25/06/2030	पिंगला	16/07/2027
राहु	01/05/2033	धान्या	15/11/2027
गुरु	12/11/2035		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			08:24:48	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			10:08:58	कन्या	हस्त	1	चंद्र	चंद्र	सम राशि	1.44	मातृ	पितृ	साधक
चंद्र			09:33:39	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	शुक्र	नीच राशि	1.29	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			09:04:50	तुला	स्वाति	1	राहु	गुरु	सम राशि	0.98	ज्ञाति	भ्रातृ	मित्र
बुध		अ	20:51:50	कन्या	हस्त	4	चंद्र	शुक्र	स्वराशि	1.07	अमात्य	ज्ञाति	साधक
गुरु			27:46:04	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.17	आत्मा	धन	अतिमित्र
शुक्र			15:12:14	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि	1.14	भ्रातृ	कलत्र	क्षेम
शनि	व		03:49:45	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	1.13	कलत्र	आयु	जन्म
राहु	व		23:59:49	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		23:59:49	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

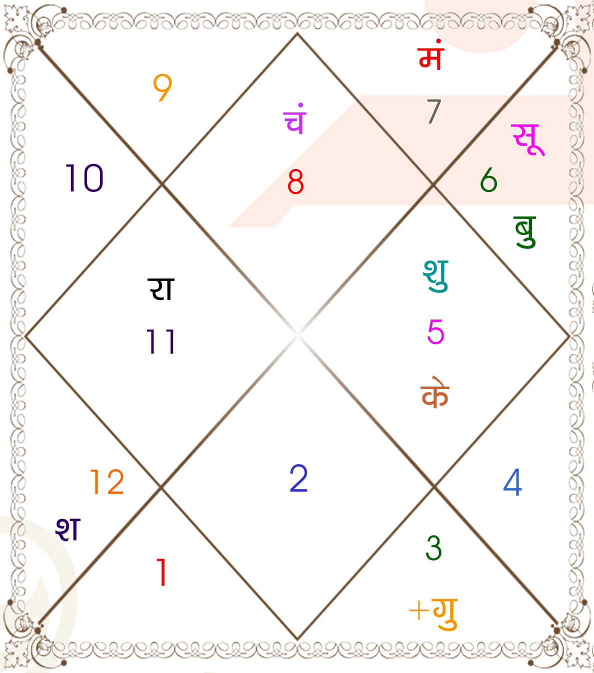

चन्द्र कुंडली

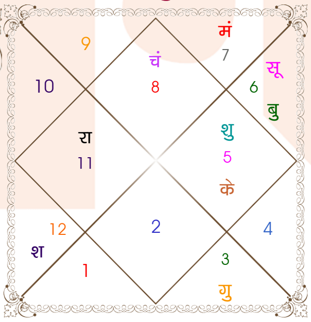

नवमांश कुंडली

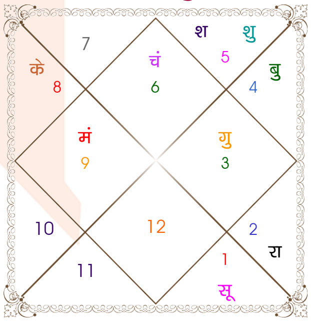

सर्वाष्टकवर्ग

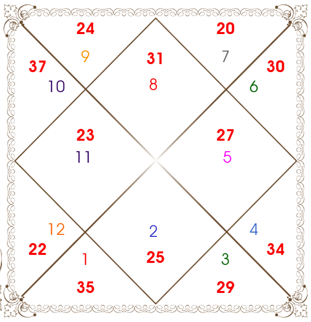

दशमांश कुंडली

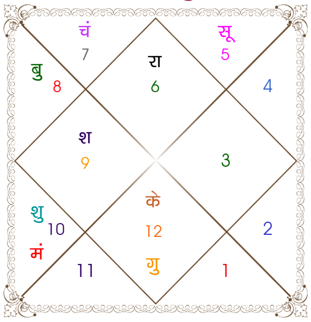

नक्षत्रफल

आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, गण देव, नाड़ी मध्य, योनि मृग तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "नि" से प्रारम्भ होगा। यथा- निरंजन, नितिन आदि

आप पुरुषार्थ से सुसम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा आपके सभी सांसारिक कार्य परिश्रम तथा ईमानदारी से पूर्ण होंगे। अपने कार्यों के संबंध में आप अधिकांश देश विदेश की यात्राएं करते रहेंगे तथा अपना अधिकांश समय घर से बाहर ही व्यतीत करेंगे। अपने समीपस्थ संबंधियों तथा अपने बन्धुवर्ग के हितकार्यों को सम्पन्न करने में आप सर्वथा तत्पर रहेंगे। साथ ही अन्य कार्यों में भी यथाशक्ति उनको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। उनके लिए इतने कार्यों को करके आपके अर्न्तमन में अत्यन्त ही प्रसन्नता तथा सन्तुष्टि का भाव संचारित होगा तथा आप पूर्ण रूपेण प्रसन्नचित रहेंगे।

पुरुषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यतः।
अनुराधोद्भवो लोके जायते हृष्टमानसः।।
जातक दीपिका

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक पुरुषार्थी, प्रवासी, बन्धुओं के कार्य को करने में तत्पर तथा हमेशा प्रसन्नचित रहता है।

आप प्रिय एवं मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगे फलतः अन्य लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप धन धान्यादि से हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा जीवन काल में कभी भी इसका अभाव महसूस नही करेंगे। समस्त भौतिक सुख संसाधनो की आपके पास प्रचुरता रहेगी तथा जीवन में आनन्दपूर्वक आप हमेशा उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप अपने समाज में एक आदरणीय तथा सम्माननीय होंगे तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि फैली रहेगी। साथ ही वैभव एवं ऐश्वर्य से युक्त रहकर आप सर्वसामर्थ्यवान पुरुष रहेंगे।

मैत्रे सुप्रियवाग्धनी सुखरतः पूज्यो यशस्वी विभुः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक प्रिय तथा सुन्दर वाणी बोलने वाला, धनवान, सुखसंसाधनों में लिप्त रहने वाला, पूज्य, यशस्वी तथा सामर्थ्यवान व्यक्ति होता है।

आप एक धनाढ्य पुरुष होकर अपना अतिरिक्त समय विदेश या घर से बाहर व्यतीत करेंगे। कभी कभी आप अपने कार्य की अतिव्यस्तता के कारण या अन्य किन्ही सांसारिक कारणों से भोजन समय पर न लेने के कारण भूख से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही घूमने फिरने कें भी आप विशिष्ट शौकीन रहेंगे तथा पिकनिक आदि में अपना समय व्यतीत करेंगे।

आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोऽनुराधासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, विदेश में वास करने वाला, भूख से व्याकुल रहने वाला तथा भ्रमण प्रिय होता है।

आपकी शारीरिक कान्ति हमेशा दैदीप्यमान रहेगी जो आपकी सुन्दरता में वृद्धि करेगी। उत्सव आयोजन करना आपका प्रिय कार्य होगा। अतः समय समय पर विभिन्न प्रकार की पार्टियों आदि का आप आयोजन करके अपने इस शौक को पूरा करेंगे। आपके शत्रु आपसे सदा पराजित तथा भयभीत दौरान आपकी- प्रति उनमें विरोध प्रकट करने की शक्ति का सर्वथा अभाव रहेगा। आपको कई प्रकार की कलाओं में भी उत्तम ज्ञान रहेगा तथा पर्याप्त धनैश्वर्य का अर्जन करके आप इनका सुखपूर्वक जीवन में उपभोग करेंगे।

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेतारिपूणां च कला प्रवीणः।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा समृद्धिशाला विविधा च तस्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यो में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका सीना विशाल तथा नेत्र बड़े बड़े होंगे। साथ ही आपके शारीरिक वर्ण में तनिक श्यामलता का समावेश दृष्टिगोचर होगा। आपके

हाथ अथवा पैर में कहीं पर मछली का चिन्ह भी हो सकता हैं एवं हाथ की अधिकांश रेखाएं वज्र एवं पक्षी के आकार की तरह दृष्टिगोचर होंगी। आप अपने माता पिता तथा गुरूजनों से अल्प मात्रा में ही सम्बन्ध रखेंगे। अतः उनसे सहयोग तथा स्नेह भी अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। आप बचपन में काफी बीमार भी पड़ सकते हैं। आप तीव्रबुद्धि के पुरूष होंगे तथा अपने इसी तीव्र बुद्धि एवं अथक परिश्रम के कारण सरकार में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी प्रवृति कठोर कार्यों को करने के लिए उद्यत रहेगी। अतः सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों में आप कार्य कर सकेंगे। यदा कदा आप अपने स्वभाव से अन्य लोगों के प्रति दुष्टता का भी प्रदर्शन करेंगे। अतः कुछ लोग आपसे कष्ट प्राप्त करेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः कूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आप का पेट तथा मस्तक भी दीर्घाकार के होंगे। आप में लोलुपता की भावना प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगी तथा अन्य जनों की वस्तुओं के प्रति आप में यह भावना उत्पन्न होगी। आपका शरीर कोमलता एवं कान्ति से भी युक्त रहेगा। आपकी प्रवृति धार्मिक भी होगी तथा भगवान के प्रति आपके मन में आस्था रहेगी। आप अपने सम्पूर्ण जीवन में धन वैभव तथा ऐश्वर्यादि से सुशोभित रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग कर सकेंगे। स्वकार्यों को सम्पन्न करने में आप दक्ष होंगे तथा नित्यप्रति कार्य करने में हमेशा तत्पर रहेंगे। निष्क्रिय होकर बैठना आपको रूचिकर नहीं लगेगा। बन्धुवर्ग से आपको सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आप एक पूर्ण पराक्रमी पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपका प्रभाव स्वीकार करेंगे एवं मन से आपको सम्मान भी प्रदान करेंगे। आप के स्वभाव में क्रोध का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा समाज में अन्य जनों के साथ भी आपके प्रेमपूर्वक संबंध रहेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार के द्वारा आपको धनहानि भी सहन करनी पड़ सकती हैं।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः कूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप के पास धन की बहुलता रहेगी तथा अपने बृहद् परिवार के अतिरिक्त अन्य बन्धुजनों का भी आप पालन करने में तत्पर रहेंगे स्त्रियों के विषय में आप अत्यन्त ही भाग्यशाली रहेंगे तथा इनसे पूर्ण सेवा सहयोग तथा लाभार्जन करने में सक्षम रहेंगे। सद्गुणों से आप सर्वथा युक्त रहेंगे तथा आदर्श मनुष्यता के गुण भी आप में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होंगे। साथ ही आप सरकारी सेवा में भी सदैव तत्पर रहेंगे। आपके हृदय में हमेशा दूसरे के धन को अपना बना लेने की इच्छा व्याप्त रहेगी तथा आजीवन आप इसके लिए तत्पर भी रहेंगे।

आप एक दृढ प्रतिज्ञ पुरूष होंगे तथा जिस चीज का एक बार संकल्प कर लेंगे उसे अन्त में पूर्ण करके ही छोड़ेंगे। आप वीरता के गुणों से सम्पन्न रहेंगे।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थ नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

यदा कदा आप मनोरंजन या समय व्यतीत करने के लिए जुआ या अन्य मनोरंजन खेलों को खेलेगे परन्तु इनमें आपको काफी आर्थिक हानि होगी। आप उग्र स्वभावी होने के कारण अन्य जनों से आपका विवाद भी होता रहेगा। कभी कभी आप अपने को मन से कमजोर महसूस करेंगे। साथ ही जीवन में आप को शान्ति की अनुभूति भी अल्प मात्रा में ही होगी अन्यथा अशान्त ही महसूस करेंगे।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बचपन से ही इधर उधर भ्रमण के शौकीन रहेंगे। आपकी प्रवृति अभिमानी भी होगी। अपने सम्बन्धियों तथा बन्धुजनों के प्रति आपके हृदय में स्नेह की भावना भी विद्यमान रहेगी। आप अपने साहसिक कार्यो के द्वारा पूर्ण रूप से धनार्जन करने में सफलता अर्जित करेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

देवगण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय होगी जो श्रोता गणों को प्रसन्नता प्रदान करेगी। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही सरल होगी। आप अपने विचारों को सरलतापूर्वक प्रस्तुत करेंगे तथा अन्य के विचारों को भी सरलतापूर्वक ग्रहण करने में समर्थ रहेंगे। आप थोड़ी मात्रा में शुद्ध तथा सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। अन्य जनों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी आप महान विद्वानों द्वारा वर्णित उच्च एवं सद्गुणों से सर्वथा सुशोभित रहेंगे। साथ ही अपने सम्पूर्ण जीवन में आप नाना प्रकार के धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में उसका उपभोग करेंगे।

आप देखने में सुन्दर होंगे तथा दानशीलता की भावना से भी युक्त रहेंगे एवं समय समय पर समाज में अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करते रहेंगे। आप एक बुद्धि मान पुरूष होंगे तथा सादगी पूर्ण ढंग से जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगे। आप अपने समाज में एक उच्चकोटि

के विद्वान होंगे एवं समाज में पूर्ण सम्मानित तथा पूज्य समझे जाएंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मृग योनि में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रवृति स्वतंत्रताप्रिय रहेंगी तथा अपने समस्त कार्यों को अपने ही तरीके से करना पसन्द करेंगे बाहरी हस्तक्षेप आपको अच्छा नहीं लगेगा। आपकी प्रवृति शान्त रहेगी तथा चंचलता का उसमें अभाव रहेगा। आप की आजीविका शुद्ध साधनों से युक्त रहेगी तथा सद्कार्यों के द्वारा आप अपनी आजीविका का अर्जन करेंगे। सत्य एवं धर्म में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इसका पालन करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आपका समीपस्थ संबंधियों तथा बन्धुवर्ग के प्रति हमेशा स्नेह शील व्यवहार रहेगा तथा उनको आप हमेशा कुछ न कुछ सहयोग अवश्य प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप एक पराक्रमी एवं शूरवीर पुरूष होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में

आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यधिपात योग, गरकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य, रेवती नक्षत्र, 1,6,11 तिथियों, गरकरण तथा व्यतिपात योग में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा तथा महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट भगवान शिव की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। साथ ही मूंगा, सोना, रक्त वस्त्र, रक्त चन्दन, गेंहू आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलो में भी कमी होगी। साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिये।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।

मंत्र- ऊं हुं श्रीं भौमाय नमः।